International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 12-12-2020; Accepted: 27-12-2020; Published: 23-01-2021
www.alleducationjournal.com
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 30-32

नवीन द्विवर्षीय बी0 एड0 पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापक और प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

कविता यादव[1], मिताली सेठ[2], मिथलेश गंगवार[2]

[1] एम0 एड0 विद्यार्थी, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेट एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाविभाग, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से भावी जीवन का निर्माण किया जा सकता है अध्यापक शिक्षा एक मात्र कार्यक्रम ही नहीं बल्कि एक ऐसा मिशन है । जिसके माध्यम से राष्ट्रीय सन्दर्भ में आधुनिक एवं परिवर्तित अध्यापकीय भूमिका का निर्वहन के लिए दक्षता एवं कुशलता प्राप्त व्यक्तियो को शिक्षित किया जा सके। वर्तमान समय में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (बी एड) का मुख्य उद्देश्य शिक्षको को सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दोनों दृष्टिकोण से उसके कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए छात्रों का सर्वांगीण विकास कर सके । इस शोध में नवीन बी एड पाठ्यक्रम की शैक्षिक गुणबत्ता के सापेक्ष महिला एवं पुरुष अध्यापक तथा महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का तुलनातमक अध्ययन किया गया है इस शोध में ५० बी एड अध्यापक तथा १०० प्रशिक्षुओं को शामिल किया गया है । न्यादर्श के चयन के लिए वर्णात्मक विधि का प्रयोग किया गया है । प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर कहा जा सकता है की महिला एवं पुरुष अध्यापक के दृ ष्टिकोण में कोई भी सार्थक अन्तर नहीं है । नवीन द्विवर्षीय पाठ्यक्रम से प्रशिक्षुओं में शिक्षा शास्त्रीय अध्ययन का पालन करते हुए आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है ।

कूट शब्दः शिक्षा शास्त्रीय, अध्यापक, शिक्षा शास्त्रीय अध्ययन

प्रस्तावना

शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से भावी जीवन का निर्माण किया जा सकता है। शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग शिक्षक शिक्षार्थी और पाठ्य वस्तु में शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। निःसन्देह शिक्षक शिक्षा प्रणाली का केन्द्र होता है। तथा समस्त शिक्षा व्यवस्था व समस्त शैक्षणिक एवं अन्य विद्यालयी क्रियाकलाप उसके चहुँ ओर विचरण करते हैं। शिक्षक को शिक्षा व्यवस्था के प्राण कहना भी अनुचित नहीं होगा क्योंकि शिक्षक ही शिक्षा व्यवस्था को जीवन्त बनाता है। शिक्षा के क्षेत्र में अनेकानेक चुनौतियॉ दिन प्रतिदिन अस्तित्व में रही हैं जिनका सामना करना प्रत्येक यथार्थ एवं अध्यापक शिक्षक का उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य हो जाता हे। अध्यापक शिक्षा एक मात्र कार्यक्रम ही नहीं बल्कि एक ऐसा मिशन है जिसके माध्यम से राष्ट्रीय संदर्भ में आधुनिक एवं परिवर्तित अध्यापकीय भूमिका के निर्वहन के लिए दक्षता एवं कुशलता प्राप्त व्यक्तियों को शिक्षित किया जा सके।

- शिक्षक पहले एवं शिक्षा ग्रहण करता है इसके बाद अपने विवेक से उसका मंथन करता है। तथा जब शिक्षा का एक सर्वाधिक लाभांवित करने वाला रूप तैयार हो जाता है।
- शिक्षक को अध्यापक शब्द से भी सम्बोधित किया जाता है। एक विद्यार्थी के जीवन में शिक्षक एक ऐसा महत्वपूर्ण इंसान होता है जो अपने ज्ञान, धैर्य, प्यार और देखभाल उसके पूरे जीवन को एक मजबूत आकार देता है।
- अध्यापक को प्रशिक्षण देने वाली संस्थाओं को शिक्षा महाविद्यालयों के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इन प्रशिक्षण संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य प्रभावशाली शिक्षक तैयार करना है आदर्श शिक्षको का व्यक्तित्व अच्छा तथा आदर्श होना चाहिए क्योंकि बालक प्रायः उनके व्यक्तित्व का अनुकरण करते हैं। कक्षा के अध्यापक को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए जिससे वह छात्रों के मानसिक, बौद्धिक, चारित्रिक विकास को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करें।
- वर्तमान समय में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (बी0एड0) का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक दोनों दृष्टिकोण से उसके कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए छात्रों का सर्वांगीण विकास कर सके। और भावी अध्यापक तैयार कर सके। वर्तमान समय को ध्यान में रखते हुए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम बी0एड0 को अधिक महत्वपूर्ण व व्यवहारिक बनाने हेतु राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा बी0एड0 की उपाधि हेतु न्यूनतम समयावधि हेतु एक वर्ष से बढ़ाकर दो शैक्षणिक वर्ष करने का प्रावधान सुनिष्चित किया गया है। जिसका मुख्य उद्देश्य अध्यापकीय शिक्षा में सुधार करना व अच्छे शिक्षक का निर्माण करना है। अतः बी0एड0 पाठ्यक्रम एक से दो वर्ष के परिवर्तन के संदर्भ में विभिन्न शिक्षाविदो, अध्यापकों एवं प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण को जानने के लिए हमें इस अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई।

1. साहनी (2011) ने अपनी रिसर्च में यह सुझाव दिया कि एक्शन रिसर्च प्रोडक्ट तथा प्ब्ज को बी0एड0 में एकीकृत कर शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य कौशल और उचित ज्ञान का विकास करना है। शिक्षकों को उचित तरीके से ध्यान में रखकर सही तकनीक का उपयोग और एकीकृत करने के लिए, प्रशिक्षुओं को सुविधा से सीखने के लिए प्रौद्योगिकी से स्थानांतरित किया जाना चाहिए।
2. यादव (2011) ने भारत में माध्यमिक स्तर का अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन किया।

मुख्य निष्कर्ष निम्न थे

1. बी0एड0 पाठ्यक्रम को पिछले पांच सालों से संशोधित नहीं किया गया था।
2. स्कूल के पाठ्यक्रम और बी0एड0 पाठ्यक्रम के बीच कोई समन्वय नहीं था।
3. व्यवहारिक पाठ्यक्रम की तुलना में सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम पर अधिक जोर दिया गया था।
4. कई विषयों की सामग्री उपलब्ध नहीं थी और पाठ्यक्रम

कठिन था।
5. अभ्यास की अवधि कम थी जिससे इसकी देख रेख ठीक नहीं की गई थी।

एस0 शारदा उषा (2012) इन्होंने अपने शिक्षण अभिक्षमता शोध में गुजरात राज्य के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों को शामिल किया जिसमें अलग–2 जिलों के प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

शोध उद्देश्य

1. नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम की शैक्षिक गुणवत्ता के सापेक्ष महिला एवं पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम की शैक्षिक गुणवत्ता के सापेक्ष पुरूष एवं महिला प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं

1. नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम की शैक्षिक गुणवत्ता के सापेक्ष महिला एवं पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण में कोई अन्तर नहीं है।
2. नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम की शैक्षिक गुणवत्ता के सापेक्ष पुरूष एवं महिला प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण में कोई अन्तर नहीं है।

शोध का सीमांकन

प्रस्तुत शोध में 50 बी0 एड0 अध्यापक और 100 प्रशिक्षुओं को शामिल किया गया है।

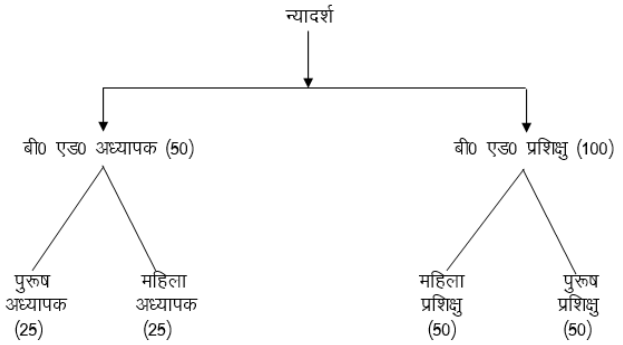

अध्ययन का प्रारूप

- प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या के चयन के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में शोध के डाटा संकलन के लिए ''नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम दृष्टिकोण मापनी'' नामक स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।
- प्रस्तुत शोध कार्य की परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं निष्कर्ष के लिए मध्यमान, मध्यांक एवं टी–परीक्षण विधियों का चयन किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम की शैक्षिक गुणवत्ता के सापेक्ष एवं महिला अध्यापकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शैक्षिक गुणवत्ता के प्रति पुरूष एवं महिला अध्यापकों के दृष्टिकोण के आंकड़े–

तालिका 1

वर्ग	छ	ड	S. D.	T-Value	Result
पुरूष	25	18.12	3.44	0.84	स्वीकृत
महिला	25	17.32	3.30		

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम की शैक्षिक गुणवत्ता पुरूष एवं महिला अध्यापक में मध्यमान 18.12 व 17.32 तथा मानक विचलन 3.44 व 3.30 तथा टी–मान 0.84 प्राप्त हुआ जो कि स्वतन्त्रता आवृत्ति अंश 48 पर 0.05 सार्थकता स्तर के मान 2.01 से कम है अर्थात शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका कारण यह हो सकता है कि नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम से अध्यापकों की शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि हुई है, प्रशिक्षण काल बढ़ने से और प्रायोगिक कार्यों को करने से उनकी क्षमताओं में वृद्धि हुई है। जिसका सकारात्मक प्रभाव शैक्षिक गुणवत्ता पर पड़ता है।

2. नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम की शैक्षिक गुणवत्ता के सापेक्ष पुरूष एवं महिला प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शैक्षिक गुणवत्ता के प्रति पुरूष एवं महिला प्रशिक्षु के दृष्टिकोण के आंकड़े–

तालिका 2

वर्ग	छ	ड	S.D.	T-Value	Result
पुरूष	50	17.42	2.96	1.54	स्वीकृत
महिला	50	16.28	4.36		

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से विदित होता है कि नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम शैक्षिक गुणवत्ता के प्रति पुरूष एवं महिला प्रशिक्षु में मध्यमान 17.42 व 16.28 तथा मानक विचलन 2.96 व 4.36 तथा टी–मान 1.54 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता आवृत्ति अंश 98 पर 0.05 सार्थक स्तर के मान 1.96 से कम है। अर्थात शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि नवीन द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के शैक्षिक गुणवत्ता के प्रति पुरूष एवं महिला प्रशिक्षु में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसका कारण अध्यापकों की शैक्षिक गुणवत्ता में हुई है प्रशिक्षुओं में शिक्षा शास्त्रीय अध्ययन का पालन करते हुए आत्म विश्वास में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष

प्रथम परिकल्पना के आधार पर नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम की शैक्षिक गुणवत्ता के सापेक्ष पुरूष एवं महिला अध्यापक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। क्योंकि प्राप्त टी–मान 0.89 मान 0.05 के सार्थकता स्तर के मान 2.01 से कम है। कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण में नवीन द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के शैक्षिक गुणवत्ता के प्रति कोई अन्तर नहीं है। क्योंकि बी0एड0 पाठ्यक्रम एक वर्ष से दो वर्षीय होने से शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि हुई और प्रशिक्षण गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

द्वितीय परिकल्पना के अन्तर्गत द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम की शैक्षिक गुणवत्ता के प्रति पुरूष एवं महिला प्रशिक्षु के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि प्राप्त टी–मान 1.54, 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से कम है। नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम से प्रशिक्षुओं में शिक्षा शास्त्रीय अध्ययन का पालन करते हुये आत्मविश्वास में वृद्धि हुयी है। शिक्षण में प्रशिक्षु उपस्थिति 90 प्रतिशत तक अनिवार्य किये जाने से शिक्षण सम्बन्धी चुनौतियों को समझने का अधिक अवसर मिल रहे हैं।

सुझाव

1- प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने केवल बरेली जिला, बरेली क्षेत्र के अध्यापकों प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है। भाव अनुसंधान अन्य जिला क्षेत्र के न्यादर्श पर किया जा सकता है।

2- इस शोध के अन्तर्गत द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है भावी अनसंधान में अन्य शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रति भी दृष्टिकोण का अध्ययन किया जा सकता है।

3- प्रस्तुत अध्ययन मात्र 150 के न्यादर्श पर किया गया है। भाव अनुसंधान विस्तृत न्यादर्श पर किया जा सकता है।

4- प्रस्तुत शोध कार्य बी0एड0 पाठ्यक्रम के द्विवर्षीय होने पर किया गया है भविष्य में बी0एड0 पाठ्यक्रम के चार वर्षीय होने पर भी अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल जे0सी0 (2008) 21वीं सदी के लिए भारत में शैक्षिक सुधार, शिप्रा प्रकाशन, दिल्ली।
2. भार्गव एम0 (2005) मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा।
3. कपिल एच0के0 (2010) सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. National council of Education Research on Training curriculam from work two year B.Ed. Programme, 2012. Retrieved from www.ncte-india.org
5. Sohni M. Improving quality of teachers why and how, Journal of Indian Education ISSN 0972-5628. 2011; 37(2):42-47
6. Yadav SK. A comparative study of Pre Service Teacher Education programme at Secondry Stage in Bangladesh, India, Pakistan and Sri Lanka. Journal of Indian Education Reviou. 2011; 48(1):100.